# हिंदी के आरंभिक उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन

**(HINDI KE AARAMBHIK UPANYASON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN)**

**A CRITICAL STUDY OF EARLY HINDI NOVELS**

**(पीएच.डी. जमा करने से पूर्व का संगोष्ठी प्रपत्र)**


**शोध निर्देशक**

**वेद रमण पाण्डेय**

**अध्यक्ष, हिंदी विभाग**

**प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता**

**शोधार्थी**

**स्मिता रजक**

**प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय कोलकाता**

**पंजीकरण संख्या: R-14RS01220002**

**पंजीयन तिथि: 18.03.2016**

**'हिंदी के आरंभिक उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन'**

मेरे पीएच.डी.शोध का विषय है- 'हिंदी के आरंभिक उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन'।

हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में पं. गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870ई.), ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय कृत 'वामा शिक्षक' (1872ई.), श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती'(1877ई.), राधाकृष्ण दास कृत 'नि:सहाय हिंदू'(1881ई.), लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा-गुरु' (1882ई.), ठाकुर जगमोहन सिंह कृत 'श्यामास्वप्न' (1885ई.), बालकृष्ण भट्ट कृत 'नूतन ब्रह्मचारी'(1886ई.), किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'प्रणयिनीपरिणय'(1887ई.), देवकीनंदन खत्री कृत 'कुसुमकुमारी'(1899ई.), अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'ठेठ हिंदी का ठाट'(1899ई.), बाबू ब्रजनंदन सहाय कृत 'सौंदर्योपासक'(1911ई.) आदि प्रमुख हैं।

भारत में पहले पहल मराठी में उपन्यास लिखा गया। मराठी का पहला उपन्यास बाबा पद्मजी कृत 'यमुना पर्यटन'(1857ई.) है। मराठी के आलोचक एम. डी. हतकनगलेकर जी मराठी उपन्यास के उदय को अंग्रेजी ढंग के उपन्यासों और अंग्रेजी शासन से जोड़कर देखते हैं। उनके अनुसार मराठी उपन्यास के लिए प्रयुक्त कादंबरी शब्द देशज है, लेकिन इसकी धारणा पाश्चात्य है। वे कादंबरी को अंग्रेजी ढंग का उपन्यास मानते हैं। यही कारण है कि वे 'यमुना पर्यटन' में यथार्थ चित्रण स्वीकार करते हुए इसका विकास हरिनारायण आप्टे जी के उपन्यासों में देखते हैं। मराठी के दूसरे आलोचक अनिकेत जावड़े जी उपन्यास के उदय को भिन्न ढंग से देखते हैं। वे मराठी उपन्यास के तत्व को प्राचीन कहकर अभिहित करते हैं, जो नए रूप में उभरा है। उदाहरण के तौर पर वे एन.एस.रिसबुड कृत 'मंजुघोषा'(1868ई.) उपन्यास को रखते हैं। वे 'मंजुघोषा' में शब्दों की झंकार जैसे जातीय तत्व की बात करते हैं।

बांग्ला साहित्येतिहास लेखक सुकुमार सेन बांग्ला उपन्यास के उदय का श्रेय अंग्रेजी उपन्यास के रोमांटिक तत्व को देते हैं। साथ ही इसमें बांग्ला गद्यरीति और प्राचीन साहित्य का भी योगदान मानते हैं। वे अंग्रेजी के साहित्यिक ढांचे से साम्य करते हुए बंकिमचंद्र कृत 'दुर्गेशनंदिनी'(1865ई.) को बांग्ला का प्रथम पूर्ण उपन्यास कहते हैं।

गुलाब दास ब्रोकर जी के अनुसार गुजराती उपन्यास के उदय के अंतर्गत पाश्चात्य शिक्षा विभाग के निरीक्षक रूसेल अपने सहकर्मी नंदशंकर तुलजाशंकर मेहता को वाल्टर स्कॉट के ऐतिहासिक ढर्रे पर रोमांसधर्मी उपन्यास लिखने को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार तुलजाशंकर जी गुजरात के अंतिम राजा पर आधारित उपन्यास 'कर्ण घेलो'(1866ई.) लिखते हैं।

प्रोफेसर सैयद एहतेशाम हुसैन जी उर्दू उपन्यास को वर्तमान युग की देन मानते हैं। वर्तमान युग से उनका तात्पर्य नवजागरण युग के गद्य साहित्य के विस्तार के समय से है। इसके अतिरिक्त यूरोपीय उपन्यास के ढांचे को समस्त भारतीय भाषाओं द्वारा अपनाये जाने की बात भी वे करते हैं। उपन्यास के अंतर्गत मानव के यथार्थ चित्रण पर विशेष बल देते हैं। वे उर्दू का पहला उपन्यासकार नज़ीर अहमद को मानते हैं। आरंभिक दौर के महान उपन्यासकारों में रतननाथ 'सरशार', सज्जाद हुसैन और मिर्जा हादी 'रुसवा' को रखते हैं। उर्दू के आलोचक कमर रईस 'मिरातुल उरुस' उपन्यास पर अंग्रेजी उपन्यास का प्रभाव देखते हुए इसे उर्दू का पहला उपन्यास कहते हैं। वे 'उमराव जान 'अदा'' को पहला पूर्ण उपन्यास कहते हैं। इसके उन्होंने तीन कारण दिए हैं। पहला, उपन्यास का प्लॉट वास्तविक और ठोस है। दूसरा, सभी घटनाओं का विस्तृत वर्णन हुआ है। तीसरा, उपन्यास पूर्ववर्ती रोमांस और यूरोपीय उपन्यासों के प्रभाव से मुक्त है।

हिंदी में उपन्यास के उदय पर विचार करते हुए आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल हिंदी के औपन्यासिक ढांचे को पाश्चात्य औपन्यासिक ढांचे की देन मानते हैं। लेकिन औपन्यासिक ढांचे के विकास को प्राचीन गद्य कथा के आधार पर देखते हैं। वे अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहल हिंदी में लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा-गुरु' को मानते हैं। हिंदी के पहले मौलिक उपन्यास लेखक के रूप में बाबू देवकीनंदन खत्री का नाम लेते हैं, किंतु इनकी रचनाओं को साहित्यिक कोटि से बाहर रखते हैं। वे किशोरीलाल गोस्वामी को हिंदी का पहला उपन्यासकार कहते हैं, क्योंकि इनकी रचनाएं साहित्यिक कोटि में आती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हिंदी में आधुनिक ढंग के उपन्यास की शुरुआत भारतेंदु युग से मानते हैं। वे भारतेंदु कृत 'पूर्णप्रकाश और चंद्रप्रभा' को पहला सामाजिक उपन्यास कहते हैं।

डॉ. गोपाल राय सन 1966ई. में 'हिंदी का पहला उपन्यास' शीर्षक से पंडित गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' प्रस्तुत करते हैं। वे यथार्थवाद को आधार बनाकर ही इस उपन्यास को हिंदी का पहला उपन्यास स्वीकार करते हैं।

सी.विजयश्री तेलुगु का प्रथम उपन्यास 'श्री रंगराजा चरित्र' को मानती हैं। लेकिन प्रथम उपन्यास के रूप में 'राजशेखर चरित्र' को मान्यता मिली है।

एस. कंदस्वामी 'तरइवन' तमिल का प्रथम उपन्यास 'कमलाम्बाल चरित्रम'(1893ई.) को मानते हैं।

असमिया उपन्यास के उदय की पृष्ठभूमि पर तिलोत्तमा मिश्र जी ने समग्र रूप से विचार किया है। वे अंग्रेजी शासन का 1826ई. में असम में अधिकार होने, व्यापारियों के विकास, मिशनरियों द्वारा लेखन को बढ़ावा देने और विभिन्न पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के जरिए उपन्यास के उदय को देखती है। वे 'सुधर्मार उपाख्यान' को प्रथम असमिया साहित्यिक गद्य और काल्पनिक नैतिक कथा कहती हैं। जबकि अन्य आलोचक इसे असमिया का प्रथम उपन्यास मानते हैं। तिलोत्तमा जी 'पदुम कुंवरी', 'भानुमती' और 'लाहोरी' को आरंभिक दौर के उपन्यास की कोटि में रखती हैं।

के. एम. थरकन मलयालम उपन्यास को पूर्ववर्ती साहित्यिक विधा से अलग मानते हैं। उनके अनुसार मलयालम एवं अन्य भारतीय भाषाओं ने इंग्लैंड से आयातित इस साहित्यिक विधा को अपनाया है। वे उपन्यास को मुख्य रूप से मध्यवर्ग का साहित्य मानते हैं। वे 'कुंदलता' को पहला रोमांसधर्मी उपन्यास कहते हैं।

गणेश्वर मिश्रा उड़िया उपन्यास का उदय पत्र-पत्रिकाओं के जरिए मानते हैं। जिनमें 'उत्कल', 'इंद्रधनु', 'उत्कल प्रभा' और 'प्रदीप' प्रमुख हैं। वे 'पद्मामली' की चर्चा एक उपन्यास के रूप में करते हैं, लेकिन प्रथम पूर्ण उपन्यास 'छह माण आठ गुंठ' को मानते हैं।

गुरचरण सिंह जी पंजाबी उपन्यास को हिंदी, उर्दू और बांग्ला भाषाओं के उपन्यासों से प्रभावित मानते हैं। सिक्ख सभा में अन्य साहित्यिक विधाओं के अलावा उपन्यास को बढ़ावा दिया गया था। 'सुंदरी' उपन्यास पंजाबी का प्रथम उपन्यास कहा जाता है।

प्राचीन ढंग के आख्यान और आधुनिक ढंग के आख्यान में कुछ तत्व समान रूप से पाए जाते हैं। मसलन कहानीपन, कथा के आरंभ में ईश्वर की स्तुति, गद्य-पद्य की शैली में कथा को रखना, लेखक या पात्र द्वारा कथा कहना, घटनाओं का होना, रहस्योद्घाटन की प्रवृत्ति, एक कथा के भीतर कई कथाओं का समाहार, आख्यान को अध्याय में बांटते हुए उसके नामांकन में विशेष प्रयोग करना, आख्यान में उपदेश का प्रवेश, बातचीत का होना, वर्णनात्मकता, पात्र और स्थान एवं चरित्र-चित्रण आदि। इन समान तत्वों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं-

कहानीपन- प्राचीन कथा साहित्य और आधुनिक उपन्यास दोनों में ही कहानी का होना अनिवार्य है| कहानी में भी कहानीपन का होना जिसे पढ़कर और सुनकर हमें रस की अनुभूति होती है। प्राचीन कथा की यह विशेषता है कि एक ही कथा के भीतर कई-कई कथाएं समाहित रहती हैं। 'बृहत्कथा' इसका अन्यतम उदाहरण है। गप्प कहने की यह प्रविधि अद्भुत है।

बातचीत- प्राचीन साहित्य में कथोपकथन की शैली विद्यमान है। कादंबरी और हर्षचरित्र में कथोपकथन शिल्प भली-भांति देखा जा सकता है। आधुनिक उपन्यासों में कथोपकथन कहीं विस्तृत रूप में है, कहीं तर्क रूप में, कहीं उपदेश, कहीं संभाषण के रूप में प्रस्तुत है। इसे एक प्रकार से भारतीय शिल्प का विकास भी कहा जा सकता है।

चरित्र-चित्रण- प्राचीन कथाओं में पात्र एक टाइप के रूप में है। जैसे- राजा, रानी, राक्षसी, पशु-पक्षी, धीरोदात नायक आदि। यह सार्वभौमिक रूप है। किंतु 'भाग्यवती' उपन्यास की नायिका भाग्यवती, 'प्रणयिनीपरिणय' उपन्यास की नायिका प्रणयिनी, 'सौंदर्योपासक' उपन्यास का नायक सौंदर्योपासक, 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास का नायक विनायक एक विशेष चरित्र है। चरित्र-चित्रण या चरित्र विकास हिंदी उपन्यासों में देखा जा सकता है। विभिन्न घटनाओं के द्वारा इन चरित्रों का विकास होता है। हिंदी के आरंभिक उपन्यासों के चरित्र विकास से यह स्पष्ट बोध होता है कि क्यों 'आनंदी', 'भाग्यवती', 'विनय', 'मैं' अन्य स्त्री और पुरुष पात्रों से भिन्न है? वे अपने आचरण से आत्मपरिष्कार, सद्भाव और मनुष्यता का संचार करते हैं।

हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में आदर्श और यथार्थ पात्र रखे गए हैं। साथ ही आदर्श और यथार्थ समाज भी है। लेकिन इन दोनों के बीच एक टकराहट है। लेखक आदर्श चरित्र और समाज गढ़ने की कोशिश में लगे हुए हैं। इसी का परिणाम है कि गंगा, किशोरी, भाग्यवती, श्यामा

कुसुमकुमारी, देवनंदन, सौंदर्योपासक जैसे पात्र यथार्थ समस्याओं से जूझते हुए आदर्श चरित्र बन जाते हैं।

'वामा शिक्षक' उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र गंगा है। गंगा का पति अपने ही सहकर्मियों से प्रभावित होकर भ्रष्टाचार की पहल करता है। किंतु गंगा अपने पति को ईमानदारी के रास्ते पर चलने को कहती है। भौतिक सुख-सुविधाएं वह यथार्थ है, जो मनुष्य को आकर्षित करती है। परंतु यथार्थ के इस आकर्षण से निकलकर ईमानदारी की राह को अपनाना आदर्श पात्र और आदर्श समाज निर्मित करने की पहल है।

19वीं शताब्दी में सांप्रदायिक धाराएं अधिक प्रबल थी। सांप्रदायिक दंगों के झुंड से बाहर निकलकर सांप्रदायिक सद्भाव को पहुंचाने का प्रयास भी लोगों में दिखता है। 'गौ-हत्या' पर रोक लगाना ही 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यास का केंद्रीय मुद्दा है। उपन्यास का एक अहम पात्र अब्दुल अजीज है। वह गौ-हत्या जैसे सांप्रदायिक मुद्दे से ऊपर उठकर मानवीय संवेदनाओं को जगाने का प्रयास करता है। वह 'कुरान' से कई उदाहरण देता है, जिसमें गोकुशी का विरोध है। इस प्रकार सांप्रदायिक सद्भावना का सकारात्मक पहलू आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

समूचे राष्ट्र में लूटपाट की स्थिति में भी मानवीय मूल्यों को बचाए रखना एक बड़ी बात है। 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास का पात्र ऐसे संक्रांति के समय में इन मूल्यों को बचाए-बनाए रखता है। आधुनिक समय में खड़े होकर आधुनिक उपन्यासों में सामंती मानवीय मूल्यों को लेकर चलने वाले पात्र भी हैं। 'देवरानी जेठानी की कहानी' उपन्यास की आनंदी, 'वामा शिक्षक' उपन्यास की गंगा एवं 'भाग्यवती' उपन्यास की भाग्यवती ऐसे ही स्त्री पात्र हैं। इनमें सेवा, परोपकार, क्षमा, दया, सहानुभूति की अद्भुत क्षमता है।

'श्यामास्वप्न' उपन्यास की श्यामा एक ऐसी स्त्री है, जो कई विपरीत स्थितियों से जूझती है। वह स्त्री से जुड़े बंधन, जाति, धर्म से ऊपर उठकर राष्ट्र के स्वप्न को ढूंढ़ने में लग जाती है। यही कारण है कि वह सामान्य स्त्री से ऊपर उठकर एक विशिष्ट स्त्री में परिणत होने लगती है।

'सौंदर्योपासक' उपन्यास का मुख्य पात्र अपने सुख-दुख से ऊपर उठता है। वह अपने जीवन में धर्म की एक नई परिभाषा सीखता है। वह अपने सुख से ऊपर उठकर 'पर' चिंतन की ओर बढ़ता है। 'ठेठ हिंदी का ठाट' उपन्यास का नायक देवनंदन भी ऐसा ही पात्र है। वह अपना घर-परिवार,

धन-संपत्ति, सुख की परवाह न करके समाज के दु:ख को दूर करने के लिए घर से निकल पड़ता है।

हिंदी के आरंभिक उपन्यासकारों की यह कोशिश रही है कि आदर्श चरित्रों से युक्त समाज का निर्माण हो। यही कारण है कि कुरीतियों, आडंबरों, फूट, अज्ञानता, भ्रष्टाचार को दिखाकर इससे मुक्त समाज की परिकल्पना भी है।

आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल 'भारतीय ढंग' शब्द का प्रयोग नहीं करते हैं। लेकिन उपन्यास में प्राचीन आख्यान परंपरा की काव्यात्मकता की अपेक्षा रखते हैं। इतना ही नहीं प्राचीन परंपरा के कथात्मक गद्य प्रबंध में लिखे गए उपन्यास 'सौंदर्योपासक' और 'राधाकांत' की सराहना भी करते हैं।

उपन्यास के भारतीय ढांचे एवं उसके विकास पर निर्मल वर्मा ने प्रश्न उठाया है। उन्होंने यह प्रश्न अपनी पुस्तक 'शब्द और स्मृति' (1976ई.) में उठाया है। 'अपने आधुनिक संदर्भों में नवीनता लिए हुए स्वप्न, फंतासी और गप्प के भारतीय शिल्प का विकास होना चाहिए। ऐसे परंपरागत शिल्प का विकसित होना संस्कृति के विकास को प्रतिबिंबित करता है'। ऐसी भारतीयता को ठाकुर जगमोहन सिंह, बाबू ब्रजनंदन सहाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रेणु, मनोहर श्याम जोशी और विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों में हम देख सकते हैं। जहां उपन्यास के माध्यम से प्रकृति में वापस लौटने की, सहानुभूति की, अपनेपन की तलाश है।

नामवर सिंह कादंबरी के ढंग पर लिखे गए आधुनिक रोमांसों को भारतीय उपन्यास कहते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि इससे उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व होता है। वे लिखते हैं- "भारतीय उपन्यास के मूलाधार उन्नीसवीं शताब्दी के ये 'रोमांस' ही हैं"। ('प्रेमचंद और भारतीय समाज'- नामवर सिंह, पृष्ठ संख्या-47)

भारतीय ढंग के उपन्यास की विशेषता है- लंबे-लंबे दृश्यों का वर्णन, प्रगल्भ भाव व्यंजना, कल्पना का प्रवेश, प्रलाप शैली का प्रयोग, अद्भुत तत्वों को शामिल करना, फैंटेसी का प्रयोग, काव्यात्मक शैली का होना, कल्पना आधारित रोमांस, गद्य-पद्य की शैली आदि। इन विशेषताओं को जिन आधुनिक उपन्यासों में देखा गया, उनके नाम हैं- ठाकुर जगमोहन सिंह कृत 'श्यामास्वप्न', ब्रजनंदन सहाय कृत 'सौंदर्योपासक'।

अंग्रेजी ढंग के उपन्यास की विशेषताएं हैं- कथ्य की दृष्टि से नवीनता, उपन्यासों में वक्रता लिए हुए घटनाएं, कथ्य का अपने विशेष समय और स्थान में घटना, यथातथ्यवाद के तहत उपन्यास के ढांचे को सत्य के अधिक निकट लाना, व्यक्तिवादी शैली का प्रवेश, घटनाएं पात्रों पर नहीं घटती बल्कि पात्रों का स्वयं घटनाओं में प्रवेश करना, बातचीत में हृदय पर प्रभाव डालने वाले मार्मिक शब्दों का प्रयोग, चरित्र-चित्रण का होना आदि। इन विशेषताओं को जिन उपन्यासों में रेखांकित किया गया है, उनके नाम है- डेनियल डेफो कृत 'रॉबिंसन क्रूसो' (1719ई.) और गुस्ताव फ्लाबेयर कृत 'मादाम बॉवेरी'(1856ई.)। इन विशेषताओं को हिंदी के जिन उपन्यासों में देखा गया है, उनके नाम है- 'देवरानी जेठानी की कहानी', 'भाग्यवती,' 'परीक्षा-गुरु', 'कुसुमकुमारी' आदि।

आरंभिक उपन्यासों में शिक्षा को महत्व दिया गया है| पंडित गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' का मुख्य पात्र सर्वसुख जी, ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय कृत 'वामा शिक्षक' का पात्र मथुरा दास एवं श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' का पात्र उमादत्त जी ऐसे पात्र हैं जो बिना किसी भेद-भाव के अपने लड़के और लड़की को शिक्षित करते हैं।

शिक्षा देने की प्रक्रिया में निहित भेद-भाव की आलोचना भी होनी चाहिए। सर्वसुख जी अपने बेटे छोटे को अंग्रेजी की शिक्षा दिलवाते हैं और बेटी सुखदेई को नागरी की शिक्षा।

'वामा शिक्षक' उपन्यास के मथुरादास जी अपनी बेटियों को इसलिए शिक्षित करना चाहते हैं, ताकि वे मनुष्य बन सके।

लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षा-गुरु' का पात्र ब्रजकिशोर है। ब्रजकिशोर के विचार समय के अनुसार नए हैं। वह तर्कसंगत रूप से वर्ग भेद और भौतिक सुखों का विरोध करता है। वह धर्म, ईश्वर, मन की वृत्तियों, स्वतंत्रता और देशोन्नति पर नए ढंग से विचार रखता है। अपनी तार्किक प्रवृत्तियों के कारण सिद्ध करता है कि "ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र बनाया है"। (पृष्ठ संख्या-68) वह आधुनिक शिक्षा को नौकरी से ऊपर देश की उन्नति से जोड़कर देखता है।

ठाकुर जगमोहन सिंह कृत 'श्यामास्वप्न' उपन्यास के नायक और नायिका अपने आधुनिक विचारों से युक्त होने के कारण ही अंतर्जातीय प्रेम और विवाह के लिए आगे आते हैं।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'ठेठ हिंदी का ठाट' उपन्यास की स्त्री पात्र हेमलता और राधाकृष्ण दास कृत 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यास का पात्र मदन मोहन समाज में प्रचलित रूढ़ियों और कुप्रथाओं का विरोध करते हैं।

मदन मोहन अपने आधुनिक विचारों के कारण ही अंग्रेज सरकार की आलोचना करता है। आलोचना के केंद्र में गौ-हत्या है। वह कहता है- "आश्चर्य है कि गवर्नमेंट ऐसी बातों पर क्यों नहीं ध्यान देती? गौऔं का मारा जाना केवल धर्म-विरुद्ध ही नहीं, वरन इससे कृषि कर्म, आरोग्य आदि का भी बड़ा अपकार होता है, परंतु इतने पर भी गवर्नमेंट ध्यान नहीं देती"। (पृष्ठ संख्या-21)  सरकार पर प्रश्न करना एक तरह से लोकतांत्रिक रवैया है।

'परीक्षा-गुरु' उपन्यास में देश की उन्नति को दो तरह से देखा गया है। ब्रजकिशोर नामक पात्र का मानना है कि उन्नति के लिए चरित्रगत विकास के साथ-साथ तकनीक का विकास भी होना जरूरी है। वे भाप और बिजली आदि की शक्ति,  नये-नये कलों का भेद, खेती की विद्या के लिए रूचि का समर्थन करते हैं। वे कहते हैं- "हिंदुस्थान का वैभव प्रतिदिन बढ़ता जाता था परंतु जबसै हिंदुस्थान का एका टूटा और देशों में उन्नति हुई, बाफ और बिजली आदि कलों के द्वारा हिंदुस्थान की अपेक्षा थोड़े खर्च, थोड़ी मेहनत और थोड़े समय में सब काम होने लगा, हिंदुस्थान के घटती के दिन आ गए; जब तक हिंदुस्थान इन बातों में और देशों के बराबर उन्नति न करेगा यह घाटा कभी पूरा न होगा"। (पृष्ठ संख्या-28)

भारतवर्ष में अंग्रेजों द्वारा कई भ्रांतियां फैलाई गई थी। जिसके घेरे में कुछ रेडिकल अंग्रेज नहीं आते हैं। यह भ्रांतियां थी कि भारतवासी अपनी रूढ़ियों और धार्मिक आडंबरों में जकड़े हैं। इन्हें मुक्ति सिर्फ अंग्रेज ही दिलवा सकते हैं। उनकी ये भ्रांतियां आगे चलकर और भी मजबूत रूप में प्रचारित होती है। वे कहने लगे कि भारतवासियों में काफी जड़ता है, इसलिए सिर्फ अंग्रेज ही अनिश्चित काल तक भारतवर्ष में राज करने के लिए बने हैं।

हिंदी के आरंभिक उपन्यास इस तरह के नियति निर्धारण वाले सोच को अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तोड़ते हैं। इसका अन्यतम उदाहरण देवकीनंदन खत्री कृत 'कुसुमकुमारी' उपन्यास है। उपन्यास में ऐसे डाकुओं का उल्लेख है, जिनसे पूरा भारतवर्ष आतंकित है। इसी आतंक से उबरने के लिए दो राजा ज्योतिष विद्या के जरिए भविष्यवाणी करते हैं। फल निकलता है कि दोनों  राजा साधु हो जाएंगे और राजसुख उनके भाग्य में नहीं है। दोनों राजा कर्म द्वारा अपनी

नियति बदलते हैं। उन डाकुओं को परास्त कर सुशासन बनाए रखने में सफल होते हैं। नियति के विरुद्ध कर्म को महत्व दिया जाना एक तरह से आधुनिक समय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर इंगित करता है।

नवजागरण काल में समाज में प्रचलित कई प्रकार की  जड़ प्रथाएं एवं मान्यताएं थी। इन प्रथाओं एवं मान्यताओं का अलग-अलग स्तरों पर विरोध भी हुआ। यह विरोध समाज सुधारक, वैयक्तिक स्तर पर देश और समाज को जागरूक कर रहे युवक तथा अन्य वर्ग के लोग कर रहे थे।

कुप्रथा, कुरीति एवं आडंबर विरोध के अंतर्गत बाल-विवाह, विधवा-विवाह, पुनर्विवाह, बेमेल विवाह और दहेज प्रथा से जुड़ी समस्याओं पर विचार किया गया है। इन समस्याओं को हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में उठाया गया है। नवजागरण से लेकर आज वर्तमान समय में भी समस्या बने इन मसलों पर विचार किया गया है।

बाल-विवाह की समस्या उन दिनों एक अहम समस्या बनी हुई थी।  'देवरानी जेठानी की कहानी' उपन्यास की मुलिया; 'वामा शिक्षक' की राधा, पार्वती, गंगा एवं किशोरी; 'भाग्यवती' उपन्यास की भाग्यवती; 'ठेठ हिंदी का ठाट' उपन्यास की देवबाला; 'कुसुमकुमारी' उपन्यास की कुसुम का विवाह सामाजिक प्रथानुकूल कम उम्र में कर दिया जाता है।

'देवरानी जेठानी की कहानी' उपन्यास में इस समस्या के प्रति समर्थन और विरोध मिलता है। परिवार के मुखिया सर्वसुख जी अपने पोते की सगाई सात वर्ष में ही करवाना चाहते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि "जब सयाना हो जाएगा कौन बिवाह सगाई करेगा लोग कहेंगे कि यह जाति में खोटे होंगे जो अब तक बिवाह नहीं हुआ"। (पृष्ठ संख्या-32) किंतु सर्वसुख जी का पुत्र इसका विरोध करता है। यह और बात है कि इस विरोध के बावजूद प्रचलित धारणा बनी रहती है।

'वामा शिक्षक' उपन्यास के पात्र मथुरादास जी; 'भाग्यवती' उपन्यास के पात्र उमादत्त जी ऐसे पात्र हैं, जो बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं का विरोध करते हैं।

जिस प्रकार बाल-विवाह का समर्थन समाज में मिलता है, उसी प्रकार बाल-विधवा पुनर्विवाह को भी विशेष महत्व नहीं दिया जाता था। बाल विवाहित स्त्रियां जब विधवा होती है तो उन्हें कई तरह की जटिल प्रथाओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें सामाजिक मान्यताओं के अनुकूल

चलना पड़ता है। कई सारे नियम कानून समाज द्वारा निर्मित कर दिये गये थे। जिसके तहत विधवा न तो अच्छे वस्त्र पहन सकती है, न ही किसी से हंस-बोल सकती है। एक तरह से यह कहना अधिक ठीक होगा कि उनपर सामान्य जन की भांति जीवन जीने पर निषेध लगा दिया जाता है।

'देवरानी जेठानी की कहानी' की एक स्त्री पात्र आनंदी बाल-विधवा की ऐसी स्थिति का विरोध करती है, वह कहती है- "सात फेरों की गुनहगार है"। (पृष्ठ संख्या-33) आनंदी वैकल्पिक तौर पर पुनर्विवाह का समर्थन करती हुई कहती है- "धर्मशास्त्र में भी लिखा है कि जिस स्त्री का उसके पति से संभाषण नहीं हुआ हो और विवाह के पीछे पति का देहांत हो जाए तो वहाँ पुनर्विवाह योग्य है"। (पृष्ठ संख्या- 34)

'भाग्यवती' उपन्यास में विधवा पुनर्विवाह का समर्थन मूल पुस्तक में था जिसे सरकारी हस्तक्षेप से निकाल दिया गया, क्योंकि विद्यालय में विधवा पुनर्विवाह की शिक्षा अनुचित थी।

हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में बेमेल विवाह की समस्या भिन्न-भिन्न है। एक तो उम्र का बेमेल और दूसरा शिक्षा का बेमेल। उम्र के बेमेल विवाह का विरोध 'भाग्यवती' उपन्यास के पात्र उमादत्त जी करते हैं। वे कहते हैं- "उदयराम शुक्ल ने हमारे रोकते- रोकते अपनी नौ वर्ष की भतीजी का विवाह एक बत्तीस वर्ष के ब्राह्मण के साथ कर दिया था"। (पृष्ठ संख्या 10)

बेमेल विवाह का दुष्परिणाम भी स्त्रियों को ही अधिक सहना पड़ता है। 'ठेट हिंदी का ठाट' उपन्यास की नायिका देवबाला सुंदर, पढ़ी-लिखी लड़की है। उसका विवाह रमानाथ नाम के लड़के से होता है। जो अनपढ़, काला-कलूटा और चोर है। ऐसे बेमेल विवाह का विरोध देवबाला की मां हेमलता करती है। यह और बात है कि शादी हो जाती है। देवबाला बेमेल विवाह के अलावा दहेज प्रथा का भी शिकार होती है। गरीब माता-पिता के पास इतना धन नहीं है कि अच्छे कुल में विवाह कर सके। कुंडली मिलान एवं दहेज की अल्पता को देखते हुए पिता की दृष्टि में रमानाथ ही उनकी बेटी के लिए सुपात्र था। ये कुप्रथाएं देवबाला को मृत्यु की ओर ले जाती है।

दहेज के रूप में चली आ रही कुप्रथा आज भी बनी हुई है। 'देवरानी जेठानी की कहानी' के लाला सर्वसुख जी विवाह में किसी भी प्रकार के दहेज या फिजूलखर्च के विरोधी हैं। उनका मानना है-

“ऊपर की टीप टाप अच्छी नहीं होती मनुष्य को चाहिए कि जितनी चादर देखे उतने पाँव पसारे”। (पृष्ठ संख्या-38) ये और बात है कि जब उन्हें अपनी नातिन को दहेज देना होता है तो भरपूर देते हैं।

‘वामा शिक्षक’ उपन्यास के जमुनादास जी दहेज प्रथा एवं फिजूलखर्ची के प्रबल विरोधी हैं। यह विरोध उनकी कथनी और करनी दोनों में दिखता है।

हिंदी के आरंभिक दौर के उपन्यासकारों ने औपन्यासिक रचना के लिए अंग्रेजी ढांचे को अपनाया। इस ढांचे के भीतर ही लेखकों ने अंग्रेजी राज का विरोध भी किया। ‘वामा शिक्षक’ उपन्यास के पात्र जमुनादास और ‘परीक्षा-गुरु’ उपन्यास के ब्रजकिशोर अंग्रेजी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा पद्धति का विरोध करते हैं। ब्रजकिशोर कहता है- “अंग्रेजी भाषा सीखने में विद्या के द्वार पर खड़े खड़े बीत गए जो अंग्रेजी की तरह ये शिक्षा अपनी देश भाषा में होती अथवा काम काम की पुस्तकों का अपनी भाषा में अनुवाद हो गया होता तो कितना समय व्यर्थ नष्ट होने से बचता”? (पृष्ठ संख्या-38)

‘वामा शिक्षक’ उपन्यास की स्त्री पात्र गंगा और ज्ञानो अंग्रेजों की नौकरी का विरोध करती है। ज्ञानो अंग्रेजी सरकार की नौकरी (डिप्टी इंस्पेक्टर) को ठुकरा कर स्वायत्त शिक्षिका का मार्ग अपनाती है। वह सरकारी नौकरी को बंधन मानती है। वहीं दूसरी ओर गंगा सरकारी नौकरी को गुलामी से भी बदतर मानती है।

अंग्रेजी राज में भ्रष्ट कानून व्यवस्था का विरोध आरंभिक उपन्यासों में हुआ है। विरोध का स्वर ‘भाग्यवती’, ‘नि:सहाय हिंदू’ ‘प्रणयिनीपरिणय’ ‘श्यामास्वप्न’ आदि उपन्यासों में है। भाग्यवती को घर में अकेली देख पुलिस वाले फर्जी जांच के लिए आते हैं, जिससे कि कुछ रुपए वसूल किया जा सके। ऐसी भ्रष्ट कानून व्यवस्था का विरोध करती हुई वह कहती है- “जमादार जी! आपने हमारे घर की बदनामी या बदमाशी किसी मिसल में लिखी देखी है, या आपको खुद ही हमारे घर पर शक हुआ है कि जिसके सबब हमारी तलाशी लोगे।...... यदि हमारे घर में चोरी का कुछ माल बरामद ना हुआ तो हम हतक की नालिश किस पर करें”? (पृष्ठ संख्या 127- 28)

अंग्रेजी राज में हो रही लूट का विरोध जिन उपन्यासों में हुआ है, वे हैं- श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत ‘भाग्यवती’, राधाकृष्ण दास कृत ‘नि:सहाय हिंदू’ एवं बालकृष्ण भट्ट कृत ‘नूतन ब्रह्मचारी’

आदि। 'भाग्यवती' उपन्यास में विरोध पुस्तक रचकर (पुस्तक का उद्देश्य मूलत: लूट के प्रति लोगों को जागरूक करना) किया गया है। 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यास में संभाषण के जरिए लूट का विरोध है तो 'नूतन ब्रह्मचारी' में नैतिकता के जरिए हैं।

राधाकृष्ण दास कृत 'नि:सहाय हिंदू', लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा-गुरु' में अंग्रेजों की दोहरी नीति का विरोध है। 'नि:सहाय हिंदू' का पात्र मदन मोहन अंग्रेजी सरकार की दोहरी नीति की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। वह कहता है- -"अब अपने बचाव के लिये भी शस्त्र न रह गया। टैक्स लगाया गया कि जिससे सारी प्रजा दु:खित हो रही है।...... बेचारे समाचार पत्रों ने जो कुछ कहना प्रारंभ किया, प्रेस-ऐक्ट बन गया।..... ऐसी न्यायपरायण गवर्नमेंट ने भी इन्हें (भारतवासियों) तुच्छ समझा, तो रह क्या गई"? (पृष्ठ संख्या-19)

'स्वदेशी का समर्थन' के तहत अपनी जातीय भाषा में उपन्यास का लिखा जाना, विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों का समर्थन, शिक्षा के स्तर पर हिंदी की देवनागरी लिपि को बढ़ावा दिया जाना, अंग्रेजी औपनिवेशवाद के बरक्स देशी व्यापार को बढ़ावा दिया जाना, स्वदेशी चिकित्सा का समर्थन, देश का गौरव गान, देश प्रेम को ईश्वर प्रेम से भी बड़ा मानने वाली प्रवृत्ति का समर्थन, समस्त जनता की उन्नति का भाव संबंधी दृष्टिकोण आदि है।

हिंदी के आरंभिक उपन्यास लेखकों ने जातीय भाषा में उपन्यास रचकर औपनिवेशिक ढांचे में स्वदेशी का परचम फहराया।

पंडित गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' एवं राधाकृष्ण दास कृत 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यासों से क्षेत्रीय बोलियों की खुशबू आती है।

'वामा शिक्षक' उपन्यास की गंगा एवं किशोरी ऐसी स्त्री पात्र है जो नौकरी के बरक्स देशी व्यापार में अपना गौरव मानती है।

'भाग्यवती' उपन्यास की स्त्री पात्र भाग्यवती स्वदेशी चिकित्साशास्त्र की आवश्यकता पर जोर देती है। खेद व्यक्त करती है कि इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। आज वर्तमान समय में आयुर्वेदिक चिकित्साशास्त्र को अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। यह एक प्रकार से देशी चिकित्साशास्त्र की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

देश के प्रति गौरव का भाव 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यास में प्रकट हुआ है। उपन्यास का पात्र मदन मोहन अतीत प्रेम के जरिए यह भाव प्रकट करता है। वह अपने भाषण में कहता है कि भारतवर्ष सभी देशों में श्रेष्ठ एवं उन्नति के शिखर पर था। भारत वर्ष में ही महान शूरवीर, ज्ञानी, ऋषि मुनि एवं श्रेष्ठ राज्य थे।

स्वामी विवेकानंद जी का मानना है कि देशवासियों के प्रति चिंता एवं देश की उन्नति का भाव आना ही देश प्रेम की सीढ़ी है। देश में व्याप्त भूखमरी, गरीबी, स्त्री पीड़ा, अशिक्षा को दूर करने का बीड़ा उठाना भी देश प्रेम के लक्षणों में आते हैं। इसी प्रकार का बीड़ा प्रारंभिक उपन्यास के पात्र उठाते हैं। इनमें मुख्य रूप से 'ठेठ हिंदी का ठाट' उपन्यास का नायक देवआनंद है तो दूसरी ओर 'नि:सहाय हिं'दू उपन्यास का मुख्य पात्र मदन मोहन है। देश को इस समस्त बेड़ियों से मुक्त करने का स्वप्न गुजराती उपन्यास में भी देखा गया है। यह स्वप्न 'सरस्वतीचंद्र' उपन्यास का नायक सरस्वतीचंद्र देखता है। वह देश को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मुक्ति दिलाना चाहता है।

हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में मध्यवर्ग के लक्षणों को रेखांकित किया गया है।

मध्यवर्ग की पहचान के लिए बंकिमचंद्र मध्यवर्ग के घेरे में क्लर्क, डॉक्टर, अध्यापक, ब्रह्म समाज के सदस्य, मुनीम, वकील, मजिस्ट्रेट, जमींदार, संपादक और बेरोजगार व्यक्ति आदि को रखते हैं।

पवन कुमार वर्मा की सूची भी बहुत कुछ बंकिमचंद्र से मिलती जुलती है। पवन कुमार वर्मा के अनुसार सरकारी कर्मचारी, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रशिक्षित व्यवसायी और व्यापारिक उद्‌यमी, खाते-पीते व्यापारी, बड़े शहरों के स्कूलों व उच्च शिक्षा के संस्थानों के अध्यापक, पत्रकार, शिक्षित या आंशिक रूप से शिक्षित मंझोले किसान, निजी क्षेत्र में कार्यरत वेतन भोगी, विधायक और विश्वविद्‌यालय के छात्रों का एक बड़ा हिस्सा मध्यवर्ग का निर्माण करता है।

उभरते हुए मध्यवर्ग में शिक्षा को नौकरी से जोड़कर देखा जाने लगा था। 'देवरानी जेठानी की कहानी' में शिक्षित मध्यवर्ग बनने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। उपन्यास का पात्र छोटे स्वयं रेलवे में नौकरी करता है। वह अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर इंजीनियर या डॉक्टर बनाने का स्वप्न भी देखता है।

अधिकांश मध्यवर्ग ब्रिटिश शासन को बनाए रखने में ही अपने हितों की रक्षा समझते थे। उनमें ब्रिटिश शासन की वैधता को लेकर किसी प्रकार का सामाजिक-राजनीतिक विद्रोह नहीं था। उल्टे उन्होंने ब्रिटिश शासन को बनाए रखने के साथ अपने हितों को जोड़ लिया था। 'भाग्यवती' उपन्यास के उमादत्त जी अंग्रेजी राज की प्रशंसा करते हुए कहते हैं- "ईश्वर ने हमको उस महाराज अंग्रेज की प्रजा बनाया है कि जो कभी अन्याय नहीं करना चाहता"। (पृष्ठ संख्या-11)

ऐसा भी मध्यवर्ग पनप रहा था जो अंग्रेजों की जीवन शैली अपना रहा था। ऐसे उभरते हुए मध्यवर्ग पर 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यास में व्यंग्य है- "उनसे यदि कुछ सीखा भी, तो वही कोट, बूट, पतलून, चुरूट, शराब, आराम, अभिमान इत्यादि दोषों के सिवा और कुछ नहीं"। (पृष्ठ संख्या-18)

'देवरानी जेठानी की कहानी', 'वामा शिक्षक', 'परीक्षा-गुरु' उपन्यास में धन और संपत्ति की लालसा में भ्रष्ट आचरण की ओर बढ़ते हुए मध्यवर्ग का चित्रण है।

सत्य के लिए एकनिष्ठ भाव से मर मिटने वाले युवा मध्यवर्ग को 'नि:सहाय हिंदू' उपन्यास में चित्रित किया गया है।

'परीक्षा-गुरु' उपन्यास का पात्र ब्रजकिशोर ऐसा पात्र है जो राष्ट्र में चारित्रिक एवं नैतिक गुणों से बदलाव लाने वाले मध्यवर्गीय पात्र का प्रतिनिधित्व करता जान पड़ता है।

शिक्षित स्त्री, अशिक्षित स्त्री, अंधविश्वासी स्त्री, उद्यमशील स्त्री, आधुनिक स्त्री, भौतिक कामनाओं को महत्व देने वाली स्त्री एवं पतिव्रता स्त्री आदि स्त्री के विविध रूप हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में मौजूद हैं।

शिक्षित बनाम अशिक्षित एवं अंधविश्वासी स्त्री को जिन आरंभिक उपन्यासों में देखा गया है' वे हैं- 'देवरानी जेठानी की कहानी', 'वामा शिक्षक' एवं 'भाग्यवती'।

आरंभिक उपन्यासों की स्त्रियों में ज्ञानो, राधा, पार्वती, भाग्यवती की मां अशिक्षित स्त्रियां हैं तो आनंदी, गंगा, किशोरी, भाग्यवती जैसी शिक्षित स्त्रियां भी है।

शिक्षित स्त्री जहां बच्चे को टीका और औषधि दिलवाने पर विश्वास करती है। वहीं अशिक्षित स्त्री जादू-टोना और मनौती जैसे अंधविश्वास को मानती है। टीका पर अविश्वास इस तरह है कि

'वामा शिक्षक' की राधा कहती है- "मैं अपने लड़कों के टीका कभी नहीं लगाऊंगी देवी माई की मुझ पर वैसे ही दया रहेगी क्या सबके टीका ही लगाया करते हैं जिनके टीका नहीं लगता क्या देवी माई उन पर कृपा नहीं करती"। (पृष्ठ संख्या- 61)

'वामा शिक्षक' उपन्यास की किशोरी एवं 'भाग्यवती' उपन्यास की भाग्यवती अपने कौशल से आर्थिक रूप से सफल बनती है। ये ऐसी स्त्रियां है जो अंधविश्वासों का विरोध भी करती हैं।

देवकीनंदन खत्री कृत 'कुसुमकुमारी' (1899ई.) उपन्यास की स्त्री पात्र कुसुम अत्यंत कम उम्र से ही तेजगढ़ का शासन संभालती है। वह अपने राज्य में सुशासन बनाए हुए हैं।

'देवरानी जेठानी की कहानी' की आनंदी ऐसी प्रगतिशील स्त्री है जो विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करती है ।

पतिव्रता स्त्री का चित्रण 'परीक्षा-गुरु' उपन्यास में हुआ है। इस उपन्यास में मदन मोहन की स्त्री एक पतिव्रता स्त्री है। वह पति के सुख-दु:ख की साथी और आज्ञा मानने वाली स्त्री है। असमय में पति के लिए गहने तो क्या प्राण तक देने के लिए तैयार रहती है।

प्रेम और विवाह को लेकर तत्कालीन समय की मानसिकता को आरंभिक उपन्यासों में रेखांकित किया गया है ।

हिंदी नवजागरण की आवश्यकता ही इसलिए थी कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में बदलाव हो सके। ऐसे रुढिगत समाज में प्रेम एक क्रांतिकारी भूमिका का रूप लेता है। 'श्यामास्वप्न' उपन्यास में त्रिकोण प्रेम की समस्या है। कमलाकांत और श्यामसुंदर दोनों ही श्यामा से प्रेम करते हैं। श्यामसुंदर को प्रेम करने के अपराध में बंदीगृह में डाल दिया जाता है। इस उपन्यास में त्रिकोण प्रेम के अतिरिक्त अंतर्जातीय प्रेम-विवाह की समस्या भी है। श्यामा ब्राह्मण की कन्या है तो श्यामसुंदर एक क्षत्रिय है।

'प्रणयिनीपरिणय' उपन्यास में नायिका और नायक का अद्‌भुत प्रेम दिखाया गया है। उनके प्रेम-विवाह को पूरे समाज में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

'सौंदर्योपासक' उपन्यास के नायक और नायिका एक दूसरे से प्रेम करते हैं जिसका अंत दुखद होता है।

‘ठेठ हिंदी का ठाट’ उपन्यास की हेमलता अपनी बेटी का प्रेम-विवाह करवाना चाहती है। किंतु सामाजिक रीति- नीति के आगे उसे घुटने टेकने पड़ते हैं।

अंग्रेजी ढंग के बरक्स भारतीय ढंग के उपन्यास अपने अस्तित्व की रक्षा कर रहे थे। भारतीय और अंग्रेजी ढंग के उपन्यास राष्ट्र को अभिव्यंजित करने में समर्थ थे। इस अभिव्यंजना के केंद्र में स्त्री अस्मिता की तलाश थी। औपन्यासिक ढांचे के भीतर राष्ट्र और स्त्री की अस्मिता की तलाश के मद्देनजर ही डॉ. नामवर सिंह जी ने आरंभिक दौर के उपन्यासों को रूपक के रूप में पढ़े जाने की वकालत की है।

हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में संस्कृत, मेरठ में बोली जाने वाली बोली, ब्रजभाषा, खड़ी बोली हिंदी, उर्दू, पंजाबी, पूर्वी हिंदी आदि की छटाएं मिलती है। प्रारंभ से ही हिंदी विभिन्न समाजों और अपने क्षेत्र की विभिन्न बोलियों को समेटती अपने स्वरूप को विकसित कर रही थी।

‘प्रणयिनीपरिणय’ उपन्यास में नायिका के सौंदर्य वर्णन में संस्कृत शब्दों का प्रयोग कुछ इस प्रकार हुआ है- “वह अलौकिक सौंदर्यप्रभा, वह हृदयहारी प्रलंब केशपाश, वह प्रणयकोषकषायित नयनकौतुक, वह अदृष्टपूर्व हावभावविभावसमूह’ वह मानससृष्टि की सदैव पूर्णचंद्रप्रभा, वह विशाल भाल, वह भृकुटिकुटिल-शरजाल, वह तीक्ष्ण तथा आश्रवणावलम्बित नेत्रयुगल........” (पृष्ठ संख्या-10)

मेरठ की बोली जो आज विलुप्त प्राय है। उसका एक उदाहरण- “जो कोई पूछती री लौंडा राजी है अच्छे विच्छे को  कहती कि नित माँदा रहे हैं दूध नहीं पीता”। (‘देवरानी जेठानी की कहानी’’ पृष्ठ संख्या-29)

‘श्यामास्वप्न’ उपन्यास में ब्रजभाषा का प्रयोग कुछ इस तरह से मिलता है- “बात मुँह से निकल परती। फिर कुछ रुक कर सोचता और कथा की छूटी डोर सी गह लेता। चकित होकर वृंदा की और देखता कि कहीं उसने यह दशा लख न ली हो”। (पृ.सं.-56)

‘भाग्यवती’ उपन्यास में एक पंजाबी अपना परिचय कुछ इस तरह देता है- “खत्तरी हाँ अते पंजाब दे देसों आया होया हाँ, ते लाहौर दे इलाके कुंजाह नामे नगर विच्च साडा घर हई”। (पृ.सं-19)

‘श्यामास्वप्न’ उपन्यास में खड़ी बोली हिंदी के साथ-साथ उर्दू का प्रयोग मिलता है। ग़ज़ल का एक उदाहरण प्रस्तुत है- “ऐ तबीबो मेरे जीने के कुछ आसार नहीं/ मत करो फिक्रो दवा/ उस मसीहा को दिखा दो तो कुछ आज़ार नहीं/ अभी हो जाए शिफा/ कितना चाहा कि तेरे इश्क में मर जाएँ हम/ पर निकलता नहीं दम”( पृष्ठ संख्या 101-102)

‘नि:सहाय हिंदू’ उपन्यास में पूर्वी बोली का प्रयोग देखिए- “न हम अंग्रेजी पढा, न हमरे पुरखा लोग अंग्रेजी पढिन, फिर जो ऊ पढिहै, तो का ओके हमहू लोगन से जादे अक्किल आय जैहे। ई सब बातन के सोच के हम ओके अंग्रेजी- पारसी कुछ नाहीं पढ़ावा खाली अपना इलम सिखाय दिया”। (पृष्ठ संख्या-3)

इस प्रकार हिंदी के आरंभिक उपन्यासों के विविध पहलुओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मसलन रूप की बात की जाए तो इन आरंभिक उपन्यासों में अंग्रेजी फॉर्म को तोड़ते हुए एक नए फॉर्म की रचना का प्रयास है। कुछ उपन्यास ऐसे हैं जो न तो पूर्ण रूप से ‘यथार्थवादी’ हो पाये हैं और न ही ‘भारतीय’। इन उपन्यासों में निहित प्रयोग को प्रकाश में लाया गया है। उदाहरण के तौर पर हिंदी के प्रमुख आलोचकों ने ‘परीक्षा-गुरु’ उपन्यास को यथार्थवादी और शिक्षाप्रद या उपदेशात्मक उपन्यास कहकर आलोचना की है। प्रस्तुत शोध में शिक्षाप्रद या उपदेशात्मकता में निहित प्रयोग को रेखांकित किया गया है। यह प्रविधि एक ओर प्राचीन आख्यानों की परंपरा से जुड़ी है तो दूसरी ओर आधुनिक समस्याओं को रखने का साधन भी है। ऐसे आधुनिक उपन्यास अंग्रेजी ढंग को अपनाते हैं तो उसे तोड़ने का माद्दा भी रखते हैं।

दूसरी ओर अंतर्वस्तु में उन प्रगतिशील तत्वों को उकेरने की कोशिश हुई है जिसकी आवश्यकता आज भी बनी हुई है। मिसाल के तौर पर नए राष्ट्र को गढ़ने में स्वदेशी व्यापार, स्वदेशी चिकित्सा, स्वभाषा, विधवा पुनर्विवाह का समर्थन, स्त्री शिक्षा, स्त्री मुक्ति, स्त्री की सबलता एवं प्रगतिशील मध्यवर्ग आदि। तत्कालीन समय में स्वदेशी व्यापार राष्ट्र को गढ़ने और मजबूत बनाने का एक साधन था। वहीं आज हस्तकला और कुटीर उद्योग प्रतीक बनते जा रहे हैं। आरंभिक उपन्यासों में स्त्री मुक्ति का प्रश्न राष्ट्रीय मुक्ति से अलग नहीं था। वर्तमान समय में स्त्री मुक्ति का प्रश्न पितृसत्ता के खिलाफ विद्रोह और दैहिक मुक्ति की मांग कर रहा है। तत्कालीन उभरते हुए मध्यवर्ग में एक प्रकार की चारित्रिक होड़ थी। जिसे आगे चलकर मैकाले की शिक्षा नीति ने बहुत हद तक विघटित किया।

कुल मिलाकर कहा जाए तो हिंदी के आरंभिक उपन्यास विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दों को समाहित करता एक खुला दस्तावेज है।


| | |
|---|---|
| शोध निर्देशक | शोधार्थी |
| वेद रमण पाण्डेय | स्मिता रजक |
| अध्यक्ष हिंदी विभाग | सीनियर रिसर्च फेलो |
| प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय | प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय |
| कोलकाता | कोलकाता |
| | पंजीकरण सं: R-14RS01220002 |
| | पंजीयन तिथि:18.03.2016 |

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. देवरानी जेठानी की कहानी- पंडित गौरीदत्त, प्रस्तुतकर्ता डॉक्टर गोपाल राय, ग्रंथ निकेतन पटना, 1966 ई.

2. वामा शिक्षक- ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय, हिंदी समय से सॉफ्टवेयर कॉपी उपलब्ध

3. भाग्यवती- श्रद्धाराम फिल्लौरी, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, प्रथम संस्करण सितंबर 1960ई.

4. नि:सहाय हिंदू- श्री राधाकृष्ण दास, गंगा-ग्रंथागार, द्वितीय संस्करण 1940ई.

5. परीक्षा-गुरु- लाला श्रीनिवासदास, ज्ञान प्रकाशन, 1958ई.

6. श्यामास्वप्न- ठाकुर जगमोहन सिंह, नागरीप्रचारिणी सभा काशी, प्रथम संस्करण 1953ई.

7. नूतन ब्रह्मचारी- बालकृष्ण भट्ट, श्री धनंजय भट्ट 'सरल,' नवीन संशोधित संस्करण मई 1950ई.

8. प्रणयिनीपरिणय- किशोरीलाल गोस्वामी, श्रीसुदर्शन प्रेस, वृंदावन में, दूसरी बार 1916ई.

9. कुसुमकुमारी- देवकीनंदन खत्री, अरुण प्रकाशन, सं. 2006

10. ठेठ हिंदी का ठाट- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, प्रथम संस्करण 1954ई.

11. सौंदर्योपासक- बाबू ब्रजनंदन सहाय, 12 मार्च 1910ई.

सहायक ग्रंथ- सूची

1. पंचतंत्र की कहानियां- भाग-1- शिव कुमार, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट (नई दिल्ली), चतुर्थ संस्करण जून 1967ई.

2. पंचतंत्र की कहानियां भाग- 2- शिवकुमार

3. पंचतंत्र की कहानियां भाग-3- शिव कुमार, चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट (नई दिल्ली) 1968ई.

4. पंचतंत्रम- विष्णु शर्मा, संपादक- प्रोफेसर बाल शास्त्री, चौखंबा विद्याभवन, संस्करण 2016 ई.

5 .प्रेमसागर- लल्लूजी लाल, प्रथम संस्करण 1939ई., प्रकाशक श्री बैजनाथ केडिया. हिंदी पुस्तक एजेंसी ज्ञानवाणी काशी

6. जातक-कथा- भदंत आनंद कौशल्यायन सुशील कुमार, प्रथम संस्करण 1950ई., सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

7. कादंबरी- श्री हरदयालु सिंह द्वारा कथासार, विष्णु प्रभाकर द्वारा संपादित, सतसाहित्य प्रकाशन पहली बार

1953 ई.

8. कादंबरी- बाणभट्ट, चौखंबा सुरभारती ग्रंथ माला, संस्करण 2017ई.

9. हर्षचरितम- बाणभट्ट, चौखंबा विद्या भवन, पुनर्मुद्रित संस्करण 2012ई.

10. वासवदत्ता- सुबंधु, चौखंबा विद्या भवन, पुनर्मुद्रित संस्करण 2004ई.

11. दशकुमारचरितम्- दंडी, मोतीलाल बनारसीदास, दशम पुनर्मुद्रण: दिल्ली 2016ई.

12. उमराव जान 'अदा'- मिर्ज़ा हादी 'रुसवा', राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2006ई., दूसरी आवृत्ति 2012ई.

13 .छह बीघा ज़मीन- फकीरमोहन सेनापति, अनुवादक- युगजीत नवलपुरी, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण 1959ई,. पुनर्मुद्रण: 1967ई., 2010 एवं 2014ई.

14. उषाकाल- हरिनारायण आप्टे, किताबघर, प्रथम संस्करण जनवरी 1968ई.

15. मिरातुल-उरूस- नज़ीर अहमद, साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 1958ई., द्वितीय संस्करण 1982ई.

16. कामिनी- रतननाथ 'सरशार', रूपांतरकार- शमशेरबहादुर सिंह सरस्वती प्रेस, बनारस 1951ई.

17. कमलाम्बा की कथा- बी.आर. राजम ऐय्यर, अनुवादक श्री क. मा. शिवराम शर्मा, सेतु प्रकाशन झांसी, प्रथमावृति संस्करण 2028 विक्रमी

18. अलालेर घरेर दुलाल- टेक चंद् ठाकुर, बंगीय साहित्य परिषद, अष्टम मुद्रण 1405

19. इंदुलेखा- ओ. चंतु मेंनन, अनुवाद सुधांशु चतुर्वेदी, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, पहला संस्करण 1994ई.

20. रामराजा बहादुर- सी.वी रमन पिल्लै- संक्षिप्तीकरण के. एन. दामोदरन नायर, अनुवाद-एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, प्रथम संस्करण 1993ई.

21. बंकिम रचनावली, खंड:एक- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, संपादक- डॉ. सुशील त्रिवेदी, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997ई.

22. बंकिम रचनावली, खंड: 2 -बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, संपादक- डॉ. सुशील त्रिवेदी, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997ई.

23. बंकिमचंद्र रचनावली, खंड: 3- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, संपादक- सुशील त्रिवेदी, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997ई.

24. आजाद-कथा- रूपांतरकार- प्रेमचंद- सरस्वती प्रेस बनारस, तृतीय संस्करण, नवंबर- 1947ई.

25. भारतीय उपन्यास: कथासार, खंड1, संपादक- डॉ प्रभाकर माचवे, भारतीय भाषा परिषद, प्रथम संस्करण 1984ई.

26. भारतीय उपन्यास: कथासार, खंड2, संपादक- डॉ प्रभाकर माचवे, भारतीय भाषा परिषद, द्वितीय संस्करण 1989ई.

27. मलयालम साहित्य का इतिहास- डॉक्टर के भास्करन नायर, हिंदी समिति, तृतीय सं- 1972ई.

28. मादाम बॉवेरी- गुस्ताव फ्लबेयर, अनुवाद-युगांक धीर, संवाद प्रकाशन मुंबई, पहला संस्करण 2004ई.

29. भारतीय साहित्य कोश- संपादक- डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण 1981ई.

30. बांग्ला साहित्येर इतिहास-सुकुमार सेन, ईस्टर्न पब्लिशर्स., प्रथम मुद्रण 1350

31 .उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- प्रोफेसर सैयद एहतेशाम हुसैन, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 1984

32. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, प्रकाशन 1999ई.

33. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, भाग- 3, राजकमल प्रकाशन,- संपादक- मुकुंद द्विवेदी, चौथा संस्करण 2013ई.

34. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, भाग 7, संपादक- मुकुंद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण 2013ई.

35. प्रेमचंद और भारतीय समाज- नामवर सिंह, संपादक- आशीष त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2010ई.

36. हिंदी उपन्यास का इतिहास- प्रोफेसर गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2002ई. पहली आवृत्ति 2009ई.

37. उपन्यास की संरचना- गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2006ई., पहली आवृत्ति 2012ई.

38. राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य कुछ प्रसंग: कुछ प्रवृतियां, वीर भारत तलवार, हिमाचल पुस्तक भंडार, द्वितीय संस्करण 1994ई.

39. आधुनिक भारत का इतिहास- विपिन चंद्र, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, पुनर्मुद्रित 2013ई.

40. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन गोरखपुर, 1955ई.

41. हिंदी उपन्यास- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 2006ई.

42. हिंदी उपन्यास का प्रारंभिक विकास- डॉक्टर कुमारी शैलबाला, सत्य सदन बाराबंकी, संस्करण प्रथम 1973ई.

43. उपन्यास और लोकतंत्र- मैनेजर पांडे, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2013ई.

44. प्रेमचंद पूर्व के हिंदी उपन्यास- ज्ञानचंद जैन, आर्य प्रकाशन मंडल, प्रथम संस्करण 1998ई.

45. कला का जोखिम- निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1981ई.

46. सर्जना और संदर्भ-अज्ञेय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण 1985ई.

47. भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान- पवन कुमार वर्मा, अनुवादक- अभय कुमार दुबे, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 1999ई.

48. आधुनिक हिंदी साहित्य- संपादक-अज्ञेय, सस्ता साहित्य प्रकाशन, संस्करण 2010ई.

49. संस्कृत साहित्य का इतिहास-ए.बी.कीथ, भाषांतरण-डॉ .मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, संस्करण 1958 ई.

50. हिंदी नवजागरण के अग्रदूत: चंद्रधर शर्मा गुलेरी, संपादक- विश्वनाथ त्रिपाठी, पहला संस्करण 1947ई. दूसरी आवृत्ति 2006ई., नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया

51. हिंदी नवजागरण के अग्रदूत: राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद, संपादक- वीर भारत तलवार, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, पहला संस्करण 2004ई., दूसरी आवृत्ति 2014ई.

52. प्रेमचंद रचनावली- भाग 7, संपादक- राम आनंद, जनवाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1996ई.

53. निराला रचनावली- भाग 5, संपादक नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण 2014ई.

54. Early Novels in India -Edited by Meenakshi Mukherjee, Sahitya Academy ,first published 2002

55. Comparative Indian literature, volume 1- Chief editor- K. M. George, Kerala Sahitya Academy, edited 1984

56. A History of Oriya Literature- Mayadhar Mansinha, Sahitya Academy, Third printing 2012

57. History of Gujarati literature- Mansukhlal Jhaveri , Sahitya Akademi , First published 1978

58. History of Assamese Literature- edited by Gobinda Prasad Sarma, Sahitya Akademi First published 2013

59. History of Assamese Literature- Birinchi Kumar Barua, Sahitya Academy, first published 1964, 6th printing 2016

60. A History of Marathi Literature- Kusumawati Deshpande and M.V. Rajadhyaksha ,Sahitya Akademi First published 1988

पत्र- पत्रिकाएं-

1. आलोचना, संपादक- डॉ. धर्मवीर भारती, अक्टूबर 1954

2. आलोचना, संपादक- नामवर सिंह, अप्रैल- जून 2002

3 .पूर्वग्रह, संपादक- अशोक वाजपेयी, दिसंबर 1981

4. साक्षात्कार, संपादक- प्रभाकर श्रोत्रिय, अक्टूबर 1992

5. साक्षात्कार, संपादक- सोमदत्त, जुलाई- सितंबर 1987

6. बहुवचन, संपादक- राजेंद्र कुमार, अप्रैल-जून 2010

7. बहुवचन, संपादक- अशोक वाजपेयी, जनवरी-मार्च 2000

8. अपनी माटी, संपादक- अशोक जमनानी, जुलाई- सितंबर 2014